मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2019 marumegh
ISSN:2456-2904

मसूर की उन्नत खेती

रवि कुमार मीना, धर्मेन्द्र त्रिपाठी एचम्पा लाल खटीक, रामू मीना, एम.ऐ.खॉन
सहायक प्रोफेसर एआरएस फतेहपुर
एस के एन ए यू जॉबनेर.
ई–मेल : ravi1931989@gmail.com

रबी की दलहनी फसलों में मसूर का प्रमुख स्थान है। यह यहॉ की एक बहुप्रचलित एवं लोकप्रिय दहलनी फसल है जिसकी खेती प्रायः सभी जिलों में की जाती है। बिहार राज्य में मसूर की खेती 1.73 लाख हेक्टेयर तथा इसकी औसत उत्पादकता 935 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इसकी खेती प्रायः असिंचित क्षेतों में धान की फसल के बाद की जाती है। बिहार राज्य में उतेरा विधि से धान की खडी फसल में बीज को छिडक कर भी बोया जाता है। रबी मौसम में सरसों एवं गन्ने के साथ अंततः फसल के रूप में लगाया जाता है। मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बनायें रखने मे भी मसूर की खेती बहुत सहायक होती है। उन्नतशील उत्पादन तकनीकों का प्रयोग करके मसूर की उपज में बढोतरी की जा सकती है।

खेती का चुनाव एवं तैयारी

ऐसी मसूर की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है लेकिन दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे उतम मानी जाती है। खेत को 2.3 बार देशी हल अथवा कल्टीवेटर से जुताई कर मिट्टी को भूरभूरी बना देते है।

मसूर की खेती के लिए अनुषंसित उन्नत प्रजातियॉ

छोटें दाने की प्रजातियॉ

पंत के 639. यह प्रजाति 135.140 दिन में तैयार हो जाती है। यह जड़ सड़न एवं उकटा रोग के लिए प्रतिरोधी मानी जाती है।

पी.एल. 406 यह प्रभेद 140.145 दिन में तैयार होती है। इसमें रस्ट बिल्ट एवं अट रोग से लड़ने की क्षमता होती है।

एच. यू. एल. 57 यह प्रजाति 120.125 दिन में परिपक्व हो जाती हैं तथा इसमें भी जड सडन एवं उकठा रोग से लडने की क्षमता है।

के.एल.एस 218. ये प्रजाति 120.125 दिन में तैयार हो जाती है।

बडे दाने वाली प्रजातियॉ

पी.एल. 77.12 **अरूण**. यह प्रभेद 115.120 दिन में परिपक्व हो जाती है। रस्ट एवं इकठा रोग से लडने की क्षमता होती है।

के. 75 मल्लिका यह 130.135 दिन में तैयार होता है। उकठा रोग के लिए यह प्रतिरोधी मानी जाती है।

बुवाई का उचित समय :

मसूर की उन्नत प्रजातियों को 15 अक्टूबर से 25 नवम्बर के बीच बुवाई कर देनी चाहिए।

बीज की मात्रा एवं बोने की विधी :

छोटे दानों वाले प्रभेदों के लिए एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में बुवाई के लिए 35.40 किलोग्राम बीज की जरूरत पडती है। जबकि बडे दानो वाले किस्मों के लिए 50.55 बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई के समय किस्मों के आधार पर कतार से कतार एवं पौधे से पौधे की दूरी क्रमशः 25 सेमी. से 10 सेमी रखनी चाहिए।

बीजोपचार :

प्रारम्भिक अवस्था के रोगों से बचाने के लिए बुवाई से पहले मसूर के बीजों को सही उपचार करना जरूरी होता है। इसके लिए ट्राइकोडर्मा विरीडी 5 ग्राम प्रति किलो बीज या कार्बेन्डाजिन 2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। बीजोपचार में सबसे पहले कवकनाशी तत्पश्चात् कीटनाशी एवं सबसे बाद में राजोबियम कल्चर से उपचारित करने का क्रम अनिवार्य होता है। जिन क्षेत्रों में कटुआ यानी कजरा पिल्लू का

प्रकोप मसूर के खेत में बढ़ जाता है। यहॉ बीज को क्लोरोपाइफास 20 ई.सी. से 6.8 मि.ली. प्रति किलोग्राम बीजोपचार करना चाहिए।

उर्वरकों का प्रयोग :

मिट्टी परीक्षण के आधार पर ही उर्वरकों का प्रयोग आवश्यकतानुसार करना चाहिए। सामान्य परिस्थिति में 20 किलो नत्रजन ए 40 किलोग्राम स्फूर एवं 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर उपयोग करना चाहिए। प्रायः असिंचित क्षेत्रों में स्फूर की उपलब्धता घट जाती है। इसके लिए पी एस बी का भी प्रयोग कर सकते है। 4 किलो पी एस बी जैविक उर्वरक को 50 किलोग्राम कम्पोस्ट में मिलाकर खेतों में बुवाई पूर्व व्यवहार करें। जिन क्षेत्रों में जिंक एवं बोरान की कमी पाई जाती है उन खेतों में 25.30 किलाग्राम जिंक सल्फेट एवं 10 किलोग्राम बोरेक्स पाउडर प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिए।

सिंचाईः

जिन खेतों की नमी कम पाई जाती है वहां एक सिचाई बुवाई के 45 दिन बाद अधिक लाभकारी होती है। खेतों में पानी का जमाव नहीं होना चाहिए। इससे फसल प्रभावित हो जाती है। प्रायः टाल क्षेत्रों में सिचाई की आवश्यकता नही पड़ती है।

खरपतवार नियंत्रण :

मसूर के खेत में प्रायः मोथा दुब बथुआ मिसिया आक्टा वनप्याजी वनगाजर आदि खरपतवार का प्रकोप ज्यादा होता है। इसके नियंत्रण के लिए 2 लीटर फ्लूक्लोरीन को 600.700 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से अंतिम जुताई के बाद छिटकर मिला दें अथवा पेण्डीयमेथीलीन 1 किलोग्राम को 1000 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 48 घंटे के अंदर छिड़काव करना चाहिए।

फसल सुरक्षा प्रबंधन :

रोग प्रबंधनः बिहार में मसूर मे प्रमुख रोग उकठा ब्लाइट बिल्ट एवं ग्रे मोल्ड है। इससे बचाने के लिए फसलों में मेंकोजेब 2 ग्राम लीटर पानी में छिडकाव करना चाहिए।

कीट प्रबंधन : मसूर के पौधे के उगने के बाद फसल की हमेशा निगरानी रखनी चाहिए जिससे कीडे का आक्रमण होने पर उचित प्रबंध तकनीक अपनाकर फसल को नुकसान से बचाया जा सके। कजरा पिल्लू कटवर्म सूडी तथा एफिड कीडो का प्रकोप मसूर के पौधों पर ज्यादा होता है। इन कीटों को आर्थिक क्षति स्तर से नीचे रखने के लिए बुवाई के 25.30 दिन बाद एजैडिरैक्टिन नीम तेल 0.3 प्रतिशत 2.5.3 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।

कटाई एवं भंडारण :

जब 80 प्रतिशत फलियॉ पक जाए तो कटाई करके झडाई कर लेनी चाहिए। भंडारण से पूर्व दानों को अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए। अगर किसान लोग उन्नत विधी से मसूर की खेती करे तो लगभग 18.20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त कर सकते है।